अध्याय -06

द्वितीय क्रियाएं

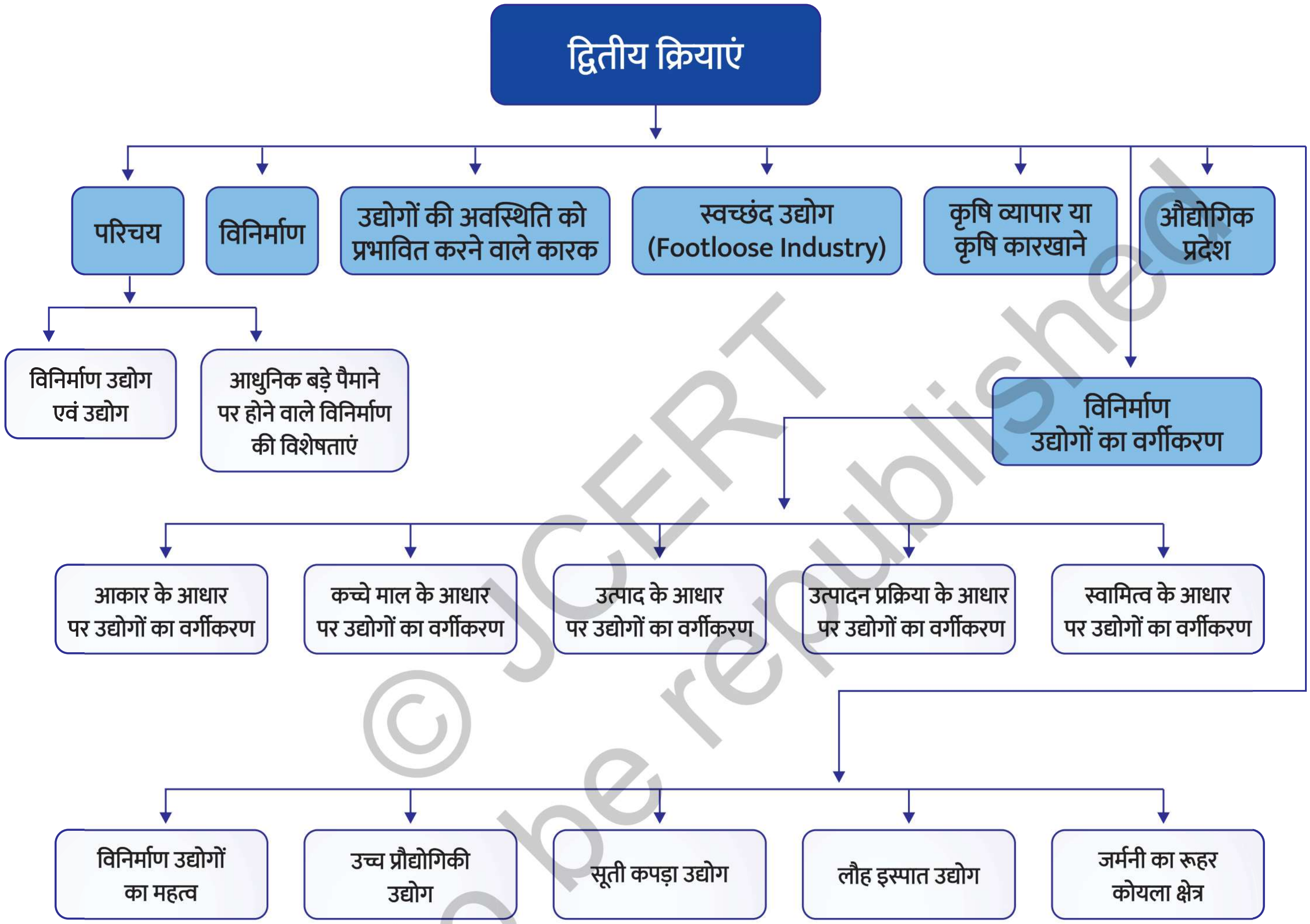

© JCERT not to be republished

आर्थिक क्रियाएं:- वे सभी क्रियाएँ जिनसे मानव की आजीविका की पूर्ति तथा आय की प्राप्ति होती है आर्थिक क्रियाएँ या मानवीय क्रियाएँ कहीं जाती हैं। मानवीय क्रियाओं को उनकी विशेषता के आधार पर प्राथमिक, द्वितीयक, तृतीयक एवं चतुर्थक में विभाजित किया जाता है।

द्वितीय क्रियाकलाप:- प्रकृति प्रदत्त वस्तुओं के रूप परिवर्तन एवं मूल्यवर्धन से संबंधित गतिविधि को द्वितीय क्रियाकलाप कहते हैं। अर्थात, प्राथमिक क्रियाएं जैसे- कृषि, वानिकी, मत्स्यन और खनन आदि से प्राप्त प्राथमिक उत्पादों को, विभिन्न माध्यमों से प्रसंस्कृत करने की प्रक्रिया को द्वितीयक क्रियाकलाप कहते हैं, जैसे लौह-अयस्क का खनन किया जाना प्राथमिक क्रियाकलाप है तदोपरांत लौह अयस्क को प्रसंस्कृत कर इस्पात बनाया जाना द्वितीयक क्रियाकलाप है।

इस प्रक्रिया द्वारा प्राथमिक उत्पाद के रूप में परिवर्तन एवं उपयोगिता व मूल्य में वृद्धि होती है।

विनिर्माण

विनिर्माण से आशय किसी भी वस्तु का उत्पादन है। हस्तशिल्प कार्य से लेकर लोहे को गढ़ना, प्लास्टिक के खिलौने बनाना, कंप्यूटर के अति सूक्ष्म घटकों को जोड़ना एवं अंतरिक्ष यान निर्माण इत्यादि सभी प्रकार के उत्पादन को निर्माण के अंतर्गत ही माना जाता है।

विनिर्माण की सभी प्रक्रियाओं में कुछ सामान्य विशेषताएं होती हैं, जैसे शक्ति का उपयोग, एक ही प्रकार की वस्तुओं का विशाल उत्पादन एवं कारखानों में विशिष्ट श्रमिक जो मानक वस्तुओं का उत्पादन करते हैं।

विद्वानों का ऐसा मत है कि तृतीय विश्व (विकसित देशों द्वारा विकसित देशों को इस संज्ञा से संबोधित किया जाता है) में आज भी द्वितीयक गतिविधियों के अंतर्गत विनिर्माण की क्रिया परंपरागत तकनीक एवं हाथों के माध्यम से किया जाता है।

© JCERT not to be republished

विनिर्माण उद्योग एवं उद्योग

शाब्दिक तौर पर विनिर्माण का अर्थ 'हाथ से बनाना' होता है किंतु वर्तमान में यंत्रों द्वारा निर्मित वस्तुओं को भी सम्मिलित किया जाता है।

वहीं उद्योग एक व्यापक अर्थ वाला शब्द है, जो वृहद स्तर की लाभोन्मुख क्रिया को संबोधित करता है। फिर भी उद्योग को विनिर्माण के पर्यायवाची के तौर पर समझा जाता है।

आजकल विभिन्न क्रियाओं जैसे फिल्म निर्माण, पर्यटन, मनोरंजन आदि को भी उद्योग के रूप में देखा जाता है और फिल्म उद्योग, पर्यटन उद्योग, मनोरंजन उद्योग आदि शब्दावलियों का प्रयोग किया जाता है किंतु यह द्वितीय क्रियाकलाप की श्रेणी में नहीं आते।

इसी कारण भूगोलवेत्ता द्वितीयक क्रियाकलाप से जुड़ी औद्योगिक गतिविधियों की स्पष्टता हेतु 'उद्योग'' के स्थान पर 'विनिर्माण उद्योग' शब्दावली का प्रयोग करते हैं।

आधुनिक बड़े पैमाने पर होने वाले विनिर्माण की विशेषताएं

कौशल का विशिष्टीकरण

वर्तमान विनिर्माण उद्योगों में न्यूनतम समय और ऊर्जा की लागत एवं बड़े पैमाने पर उत्पादन हेतु कौशल का अत्यधिक विशिष्टीकृत स्वरूप देखने को मिलता है जैसे 'समानुक्रम उत्पादन' जिसमें प्रत्येक क्रियाएँ निरंतर एक ही कार्य करता रहता है।

यंत्रीकरण

यंत्रीकरण से तात्पर्य है किसी कार्य को पूर्ण करने के लिए मशीनों का प्रयोग करना। स्वचालित मशीनें (बिना मानवीय हस्तक्षेप के कार्य करने वाली) वर्तमान के विनिर्माण उद्योगों की अहम हिस्सा हो चुकी हैं।

प्रौद्योगिकी नवाचार

प्रौद्योगिकी नवाचार, शोध एवं विकासमान युक्तियों के द्वारा विनिर्माण की गुणवत्ता को नियंत्रित करने, अपशिष्टों के निस्तारण एवं अदक्षता को समाप्त करने तथा प्रदूषण के विरुद्ध संघर्ष करने का महत्वपूर्ण पहलू है।

संगठनात्मक ढांचा का स्तरीकरण

a. जटिल प्रौद्योगिकी यंत्र b. अत्यधिक विशिष्टीकृत कार्यप्रणाली
c. अत्यधिक कम लागत में अधिकतम उत्पादन d. अधिक पूंजी निवेश e. विशाल नियामक वर्ग

अनियमित भौगोलिक वितरण

विश्व के कुल स्थलीय भाग के मात्र 10% भूभाग पर ही विनिर्माण उद्योगों का विकास हो पाया है। विश्व के अधिकांश देश आज भी प्रौद्योगिकी दृष्टि से पिछड़े हुए हैं। वहीं विनिर्माण के क्षेत्र में विकसित देश आर्थिक एवं राजनीतिक शक्ति के केंद्र बन चुके हैं।

© JCERT not to be republished

उद्योगों की अवस्थिति को प्रभावित करने वाले कारक

बाजार की निकटता:- विनिर्माण उद्योग की प्रकृति के आधार पर बाजार की उपलब्धता विशेष महत्व रखती है। निर्मित वस्तुओं की खपत हेतु ग्राहकों की उपलब्धता ही वास्तव में बाजार है। प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थों की खपत हेतु विशाल जनसंख्या की आवश्यकता होती है अतः इन उद्योगों की स्थापना सघन जनसंख्या वाले क्षेत्रों के नजदीक की जाती है, वहीं कुछ उद्योग ऐसे हैं जिनका बाजार की निकटता से कोई संबंध नहीं, जैसे वायुयान निर्माण एवं शस्त्र निर्माण उद्योग।

कच्चे माल की उपलब्धता:- भारी वजन सस्ते मूल्य एवं वजन घटने वाले कच्चे मालों से संबंधित उद्योग साथ ही शीघ्र नष्ट होने वाले पदार्थों से संबंधित उद्योग प्रायः कच्चे माल के स्रोत के समीप स्थापित किए जाते हैं। जैसे इस्पात, चीनी, सीमेंट उद्योग तथा कृषि व डेयरी आधारित उद्योग।

श्रम आपूर्ति:- बढ़ाते हुए यंत्रीकरण, स्वचलन एवं औद्योगिक प्रक्रिया के लचीलापन ने उद्योगों में श्रमिकों पर निर्भरता को कम किया है, फिर भी कुछ प्रकार के उद्योगों में आप भी कुशल श्रमिकों की आवश्यकता होती है।

शक्ति के साधनों की सुलभता:- वे उद्योग जिनमें अधिक शक्ति की आवश्यकता होती है वह ऊर्जा के स्रोतों के समीप लगाए जाते हैं जैसे एल्युमिनियम उद्योग।

परिवहन एवं संचार साधनों की सुविधा:- कच्चे माल का उद्योगों तथा उत्पादित माल का बाजार तक पहुंचने के लिए विकसित एवं व्यवस्थित संचार एवं परिवहन सुविधाओं की आवश्यकता होती है।

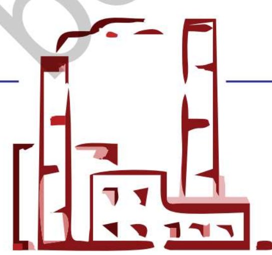

अनुकूल जलवायु:- कई उद्योगों हेतु विशिष्ट जलवायु विशेषताओं की आवश्यकता होती है जैसे सूती वस्त्र उद्योग के लिए आर्द्र जलवायु की आवश्यकता होती है क्योंकि आर्द्र जलवायु में धागा कम टूटता है तथा धागा महीन से महीन बनाया जा सकता है।

सरकारी नीति:- किसी भी प्रदेश में औद्योगिक विकास को प्रोत्साहित करने में सरकारी नीतियों का अहम योगदान होता है।

© JCERT not to be republished

स्वच्छंद उद्योग (Footloose Industry)

स्वच्छंद उद्योग

- इनकी अवस्थिति पर कच्चे माल के स्रोत से दूरी का असर नहीं होता।
- इनके उत्पाद छोटे तथा आसानी से परिवहन के योग्य होते हैं।
- इन उद्योगों में अभिगम्यता को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाती है अतः यह सड़कों के निकट स्थापित किए जाते हैं।
- ये ऐसे उद्योग होते हैं जिन पर विनिर्माण उद्योग के अवस्थिति को प्रभावित करने वाले कारकों का असर नहीं पड़ता।
- औद्योगिक गतिविधि में कम लोगों की संलग्नता होती है। ये कच्चे माल के स्थान पर संघटक पुर्जों पर निर्भर रहते हैं।
- ये उद्योग सामान्यतः प्रदूषण नहीं फैलाते हैं। जैसे, हीरे, कंप्यूटर चिप्स, सॉफ्टवेयर, मोबाइल निर्माण आदि।

कृषि व्यापार या कृषि कारखाने

कृषि व्यापार या कृषि कारखाने

- इसका वित्तपोषण वह व्यापार करता है जिसकी मुख्य रुचि कृषि के बाहर हो।
- कृषि व्यापार एक प्रकार की व्यापारिक कृषि है जो औद्योगिक पैमाने पर की जाती है।
- इनकों 'कृषि कारखाने' भी कहा जाता है।
- यह फार्म से आकार में बड़े यंत्रीकृत, रसायनों पर निर्भर व अच्छी संरचना वाले होते हैं।

© JCERT not to be republished

उद्योगों का वर्गीकरण

- **आकार के आधार पर**
  - कुटीर उद्योग
  - छोटे पैमाने के उद्योग
  - बड़े पैमाने के उद्योग
- **कच्चे माल के आधार पर**
  - कृषि आधारित
  - खनिज आधारित
    - धात्विक खनिज उद्योग
    - अधात्विक खनिज उद्योग
  - रसायन आधारित
  - पशु आधारित
  - वन आधारित
- **उत्पाद के आधार पर**
  - आधारभूत उद्योग
  - उपभोक्ता वस्तु उद्योग
- **स्वामित्व के आधार पर**
  - सार्वजनिक उद्योग
  - निजी उद्योग
  - संयुक्त क्षेत्र के उद्योग

आकार के आधार पर उद्योगों का वर्गीकरण

कुटीर उद्योग

- यह विनिर्माण की सबसे छोटी इकाई है।
- कम पूंजी की आवश्यकता होती है।
- इसमें परिवार के सदस्यों की सहायता से, परंपरागत साधनों द्वारा स्थानीय कच्चे माल का प्रयोग कर दैनिक उपयोग की वस्तुओं का निर्माण किया जाता है ।
- इस उद्योग में दैनिक जीवन के उपयोग में आने वाली वस्तुओं जैसे खाद्य पदार्थ, कपड़ा, चटाई, बर्तन, फर्नीचर, जूते, लघु मूर्तियां, सोने-चांदी के आभूषण, मिट्टी के बर्तन, चमड़े से बनी वस्तुएं, बांस एवं स्थानीय वन से प्राप्त लकड़ियों से बनी वस्तुएं आदि शामिल है।

छोटे पैमाने के उद्योग

- इस प्रकार के उद्योग में निर्माण स्थल घर से बाहर (कारखाना) होता है ।
- उत्पादन, ऊर्जा से चलने वाली मशीनों तथा मजदूरों द्वारा किया जाता है ।
- इसमें कच्चा माल स्थानीय बाजार में उपलब्ध न होने पर बाहर से भी मंगवाते है ।

बड़े पैमाने के उद्योग

- उत्पादन, विकसित प्रौद्योगिकी तथा कुशल श्रमिकों द्वारा किया जाता है।
- उत्पादन अथवा उत्पादित माल को विशाल बाजार में बेचा जाता है।
- इसमें उत्पादन की मात्रा भी अधिक होती है ।
- अधिक पूंजी तथा विभिन्न प्रकार के कच्चे माल का प्रयोग किया जाता है ।
- पहले इनका विस्तार मुख्य रूप से ग्रेट ब्रिटेन, संयुक्त राज्य अमेरिका एवं पश्चिमी विकसित देशों में देखा जाता था परंतु अब यह विश्व के सभी भागों में मिलते हैं।

© JCERT not to be republished

कच्चे माल के आधार पर उद्योगों का वर्गीकरण

कृषि आधारित उद्योग

- वह उद्योग जो कृषि द्वारा उत्पादित कच्चे माल पर निर्भर होते हैं कृषि आधारित उद्योग कहलाते हैं।
- उदाहरण के लिए शक्कर उद्योग, आचार उद्योग, फलों के रस, पेय पदार्थ(चाय, कॉफी), मसाले, रबड़ उद्योग, वस्त्र उद्योग एवं तेल उद्योग आदि।
- इन उद्योगों में कृषि से प्राप्त कच्चे माल को तैयार माल में बदलकर ग्रामीण एवं नगरीय भागों में बेचने के लिए भेजा जाता है।

खनिज आधारित उद्योग

- वे उद्योग जिनमें खनिजों का उपयोग कच्चे माल के रूप में किया जाता है खनिज आधारित उद्योग कहलाते हैं। जैसे, लौह इस्पात उद्योग, सीमेंट उद्योग आदि।
- खनिज आधारित उद्योग को मुख्य रूप से दो भागों में बांटा जाता है :-
- धात्विक खनिज उद्योग:- इसमें वे उद्योग आते हैं जो धात्विक खनिजों जैसे लोहा, एलुमिनियम, तांबा आदि का उपयोग करते हैं।
- अधात्विक खनिज उद्योग:- इसमें वे उद्योग आते हैं जो मुख्य रूप से अधात्विक खनिज का उपयोग करते है। जैसे, सीमेंट उद्योग।

रसायन आधारित उद्योग

- इस प्रकार के उद्योगों में प्राकृतिक रूप से पाए जाने वाले रासायनिक खनिजों का उपयोग होता है जैसे कि पेट्रो रसायन उद्योग, प्लास्टिक उद्योग आदि।

पशु आधारित उद्योग

- वह उद्योग जिन में पशुओं से प्राप्त वस्तुओं का उपयोग कच्चे माल के रूप में किया जाता है पशु आधारित उद्योग कहलाते हैं, उदाहरण के लिए चमड़ा उद्योग, ऊनी वस्त्र उद्योग आदि।

वनों पर आधारित उद्योग

- वे उद्योग जो कच्चे माल के लिए वनों पर निर्भर होते हैं वन आधारित उद्योग कहलाते हैं, उदाहरण के लिए फर्नीचर उद्योग, कागज उद्योग, लाख उद्योग आदि।

© JCERT not to be republished

उत्पाद के आधार पर उद्योगों का वर्गीकरण

आधारभूत उद्योग

वह उद्योग जो दूसरे उद्योगों के लिए आवश्यक वस्तुएं बनाते हैं उन्हें आधारभूत उद्योग कहा जाता है उदाहरण के लिए मशीन बनाने वाले उद्योग, लोहा और इस्पात उद्योग।

उपभोक्ता वस्तु उद्योग

उपभोक्ता वस्तु उद्योग ऐसे सामान का उत्पादन करते हैं जो प्रत्यक्ष रूप से उपभोक्ता द्वारा उपयोग कर लिया जाता है। जैसे ब्रेड एवं बिस्कुट, चाय, साबुन, कागज, टेलीविजन, श्रृंगार सामान इत्यादि।

उत्पादन प्रक्रिया के आधार पर उद्योगों का वर्गीकरण

परंपरागत उद्योग

- लंबे समय से विनिर्माण गतिविधियों में सक्रिय हैं एवं पुरानी पद्धतियों से उत्पादन प्रक्रिया को संपादित करते हैं।
- इन उद्योगों द्वारा भारी मात्रा में प्रदूषण फैलाया जाता है।
- अधिक लोगों को रोजगार प्राप्त होता है।
- श्रमिक चुनौतीपूर्ण दशाओं में कार्य करते हैं।

उच्च प्रौद्योगिकी उद्योग

- इनके द्वारा उत्पादन कार्यों में उच्च स्तर के प्रौद्योगिकी का प्रयोग किया जाता है।
- इनके द्वारा परंपरागत उद्योगों की तुलना में कम प्रदूषण फैलाया जाता है।
- इन उद्योगों में रोजगार के अवसर कम होते हैं क्योंकि इनके द्वारा स्वचालित मशीनों का अधिक प्रयोग किया जाता है।
- श्रमिकों हेतु कार्य दशा अनुकूल होती है।

© JCERT not to be republished

स्वामित्व के आधार पर उद्योगों का वर्गीकरण

सार्वजनिक क्षेत्र

- ऐसे उद्योग सरकार के अधीन होते हैं।
- सरकार ही इनका प्रबंधन करती है।
- भारत में बहुत से उद्योग सार्वजनिक क्षेत्र के बीच है जैसे भिलाई, बोकारो, दुर्गापुर, राउरकेला के लौह इस्पात उद्योग।
- अधिकतर समाजवादी, साम्यवादी देशों में ऐसा होता है।

निजी क्षेत्र

- ऐसे उद्योगों का मालिक एक व्यक्ति या एक कम्पनी होती है।
- व्यक्ति या निजी कंपनियां इन उद्योगों का प्रबंधन करती है।
- पूंजीवाद देशों में यह व्यवस्था होती है।
- भारत में टाटा समूह, बिरला, रिलायंस इंडस्ट्री इसके उदाहरण है।

संयुक्त क्षेत्र

- कुछ उद्योगों का संचालन सरकार और निजी कंपनियां मिलकर करती है।
- हिन्दुस्तान पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लिमिटेड (HPCL) तथा मित्तल एनर्जी लिमिटेड साझेदारी (HMEL) इसका उदाहरण है।

© JCERT not to be republished

औद्योगिक प्रदेश

- जहां परंपरागत भारी उद्योगों का विस्तृत विकास मिलता है उन्हें औद्योगिक प्रदेश कहा जाता है।
- इन प्रदेशों में कोयला खदानों के समीप स्थित धातु पिलाने वाले उद्योग, भारी इंजीनियरिंग उद्योग, रसायन निर्माण उद्योग, वस्त्र उत्पादन उद्योग आदि को सम्मिलित किया जाता है।
- इन्हें 'धुएँ की चिमनी' वाला उद्योग भी कहते हैं।
- औद्योगिक प्रदेशों में रोजगार का अनुपात ऊंचा होता है। परंतु आधारभूत संरचनात्मक सुविधाएं निम्न स्तर की होती हैं।
- वातावरण अनाकर्षक होता है, जहां गंदगी के ढेर यहां-वहां दिखाई पड़ते हैं।
- कारखानों के बंद होने पर उत्प्रवास बेरोजगारी आदि समस्याओं से जूझना पड़ता है।

जर्मनी का रूहर कोयला क्षेत्र

- औद्योगिक क्रांति की शुरुआत से ही कोयला ऊर्जा का एक महत्वपूर्ण स्रोत रहा है। इसी कारण इसे 'काला सोना' भी कहा जाता है।
- जर्मनी का रूर प्रदेश यूरोप का सबसे बड़ा एवं विश्व विख्यात कोयला क्षेत्र है। यहां जर्मनी का 60% कोयला निकाला जाता है।
- यह लंबे समय तक यूरोप का प्रमुख औद्योगिक केंद्र रहा। कोयला एवं लौह अयस्क यहां की अर्थव्यवस्था का आधार था जिस पर संपूर्ण औद्योगिक गतिविधि निर्भर थी, जैसे लौह-इस्पात उद्योग, सूती वस्त्र उद्योग, ऊनी वस्त्र उद्योग आदि।
- परंतु कोयले की कमी आने के साथ ही यह औद्योगिक प्रदेश संकुचित होता चला गया। वर्तमान में यहां लौह अयस्क के भंडार भी समाप्त हो चुके हैं तथापि, आयातित लौह-अयस्क के द्वारा इस क्षेत्र के कुछ उद्योग कार्यशील है। जर्मनी के इस्पात उत्पादन का 80% रूहर से प्राप्त होता है।
- अब रूहर औद्योगिक प्रदेश में कोयले व इस्पात आधारित उद्योगों के बजाय नए उद्योगों का विकास हो रहा है जैसे, कार निर्माण उद्योग, रासायनिक संयंत्र एवं विश्वविद्यालय। यह एक बड़ा व्यापारिक केंद्र बन चुका है, जिससे एक 'नया रूहर' भू दृश्य विकसित हो रहा है।

© JCERT not to be republished

लौह इस्पात उद्योग

- लौह-इस्पात उद्योग सभी उद्योगों का आधार है इसलिए इसे आधारभूत उद्योग भी कहा जाता है, क्योंकि अन्य सभी भारी हल्के मध्यम उद्योग इनसे बनी मशीनों पर निर्भर होते हैं।
- लौह इस्पात उद्योग में कच्चे माल के ग्रुप में कोयला चूना पत्थर लौह अयस्क मैंगनीज क्रोमियम आदि का इस्तेमाल किया जाता है।
- लौह अयस्क से लोहा प्राप्त करने के लिए सबसे पहले झोंका भट्टी में इसे कोक एवं चूना पत्थर के साथ प्रगलित किया जाता है।
- पिघला हुआ लोहा बाहर आकर जब ठंडा होता है तो उसे एक कच्चा लोहा कहते हैं। कच्चे लोहे में मैंगनीज मिलाकर इस्पात बनाया जाता है।
- लौह इस्पात उद्योगों की अवस्थिति में कच्चे माल की उपलब्धता का विशेष महत्व होता है। क्योंकि इनके द्वारा निर्मित उत्पाद का वजन कच्चे माल की तुलना में कम होता है अतः परिवहन व्यय को घटाने की दृष्टि से उद्योगों की अवस्थिति कच्चे माल स्रोतों के समीप की जाती है।
- इसमें अत्यधिक पूंजी निवेश की आवश्यकता होती है और विस्तृत बाजार एवं जल स्रोतों की उपलब्धता, परिवहन एवं संचार की सुगमता आदि का भी विशेष महत्व होता है।
- विश्व में लौह-इस्पात उद्योगों के महत्वपूर्ण केंद्र निम्न हैं:-
  - संयुक्त राज्य अमेरिका:- संयुक्त राज्य अमेरिका में लौह इस्पात का उत्पादन करने वाले प्रमुख क्षेत्र
  - अप्लेशियन प्रदेश में पिट्सबर्ग। (जंग का कटोरा:- संयुक्त राज्य अमेरिका में स्थित पिट्सबर्ग को 'जंग का कटोरा' नाम से जाना जाता है क्योंकि पिट्सबर्ग लौह उत्पादन का प्रमुख क्षेत्र था जिसका महत्व अब घट गया है । अब यहां कई जंग लगे लौह इस्पात संयंत्र देखे जा सकते हैं ।)
  - महान झील क्षेत्र में शिकागो, गैरी, इरी, क्लीवलैंड, लॉरेन, बफेलो एवं दुलूथ।
  - अटलांटिक तट में स्पैरोज पॉइंट एवं मॉरीसविले।
  - ग्रेट ब्रिटेन:- यहां बर्मिंघम एवं शेफील्ड प्रमुख लौह इस्पात उत्पादक केंद्र है।
  - जर्मनी:- यहां डूइसबर्ग, डॉर्टमुंड, डुसेलडोर्फ एवं ऐसेन।
  - फ्रांस:- यहां ली क्रीयुसोट एवं सैंट इटीनी।
  - सोवियत रूस:- मास्को सेंट पीट्सबर्ग लीपेटस्क एवं तुला।
  - यूक्रेन:- क्रीवोयरोग एवं दोनेत्स्क।
  - जापान:- नागासाकी, टोक्यो और योकोहामा।
  - चीन:- शंघाई, तियनस्तिन एवं वुहान।
  - भारत:- जमशेदपुर, कुल्टी, दुर्गापुर, राउरकेला, भिलाई, बोकारो, सलेम, विशाखापट्टनम, भद्रावती आदि।

© JCERT not to be republished

सूती कपड़ा उद्योग

- सूती कपड़ा उद्योग के अंतर्गत हथकरघा, बिजली करघा एवं कारखानों में निर्मित सूती कपड़ों को सम्मिलित किया जाता है।
- हथकरघा क्षेत्र अधिक मात्रा में अर्ध कुशल श्रमिकों को रोजगार प्रदान करता है। इसमें निवेश की आवश्यकता भी कम होती है।
- इसके अंतर्गत सूत की कताई, बुनाई आदि का कार्य किया जाता है।
- बिजली करघों कपड़ा बनाने में यंत्रों का प्रयोग किया जाता है जिस कारण श्रमिकों की आवश्यकता कम होती है और उत्पादन अधिक होता है।
- कारखानों में कपड़ा बनाने के लिए अधिक पूंजी निवेश की आवश्यकता होती है और इसमें अच्छे कपड़ों का अधिक मात्रा में उत्पादन किया जाता है।
- वर्तमान में भारत विश्व का अग्रणी कपास उत्पादक है (भारत का शीर्ष कपास उत्पादक राज्य गुजरात है)।
- कृत्रिम रेशे के बढ़ते प्रयोग ने कपास को कड़ी प्रतिस्पर्धा दे रखी है।
- सूती वस्त्र उद्योग के स्थानीयता को कपास की उपलब्धता, बाजार, परिवहन, पतन की समीपता, आद्र जलवायु, कुशल श्रमिकों की उपलब्धता आदि प्रभावित करता है।
- भारत में पहली सफल सूती वस्त्र उद्योग की स्थापना १८५४ में कवास जी डाबर द्वारा मुंबई में की गई थी।
- विश्व में सूती वस्त्र उद्योगों के महत्वपूर्ण केंद्र निम्न हैं:-
  - ग्रेट ब्रिटेन:- में सूती वस्त्र उद्योग के प्रमुख क्षेत्र लिवरपूल, मैनचेस्टर आदि हैं
  - संयुक्त राज्य अमेरिका:- में न्यू इंग्लैंड क्षेत्र के मैनचेस्टर, लॉरेंस; मध्य अटलांटिक क्षेत्र मेंफिलाडेल्फिया; दक्षिणी क्षेत्र में अलाबामा, पीडमोण्ट, कोलंबिया, अटलांटा, आदि।
  - जापान:- में सूती वस्त्र उद्योग के प्रमुख केंद्र ओसाका, हिरोशिमा, कोबे, याकोहामा, नगोया, टोक्यो हैं।
  - फ्रांस:- में सूती वस्त्र उद्योग के प्रमुख केंद्र बेलफोर्ट, कॉलमार, नैंसी, नारमैंडी क्षेत्र, लीले, लेंस आदि हैं।
  - जर्मनी:- में रूहर और सैक्सोनी क्षेत्र में सूती वस्त्र उद्योग का विस्तार मिलता है।
  - भारत:- में सूती वस्त्र उद्योग के प्रमुख केंद्र मुंबई, नागपुर, कानपुर, अहमदाबाद, सूरत, वडोदरा, आदि हैं।

© JCERT not to be republished

उच्च प्रौद्योगिकी उद्योग

- वर्तमान युग को हम उच्च प्रौद्योगिकी युग कह सकते हैं।
- वे उद्योग जहां उच्च प्रौद्योगिकी के द्वारा वस्तुओं का निर्माण एवं उत्पादन किया जाता है उन्हें उच्च प्रौद्योगिकी उद्योग कहते हैं, जैसे कंप्यूटर हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर उद्योग, दूरसंचार उपकरण उद्योग, सैन्य उपकरण उद्योग, अंतरिक्ष खोज एवं कृत्रिम उपग्रहों के निर्माण से जुड़े उद्योग, विभिन्न सूक्ष्म इलेक्ट्रॉनिक उपकरण बनाने वाले उद्योग, चिकित्सा उपकरण बनाने वाले उद्योग आदि।
- इन उद्योगों में गहन शोध एवं अनुसंधान द्वारा उत्पादन प्रक्रिया को संपन्न किया जाता है।
- इन उद्योगों में कार्यरत कर्मचारी मुख्य रूप से सफेद कॉलर श्रमिक होते हैं। जबकि नीले कलर श्रमिकों की संख्या इन से कम होती है।
- परंपरागत उद्योगों के विपरीत उच्च प्रौद्योगिकी वाले औद्योगिक क्षेत्रों में पर्यावरण साफ सुथरा, कार्यस्थल श्रमिकों के अनुकूल, बिखरे हुए कार्यालय, उच्च वेतनमान और जीवन स्तर उत्कृष्ट श्रेणी का होता है।

विनिर्माण उद्योगों का महत्व

- विनिर्माण उद्योग से कृषि के आधुनिकीकरण में मदद मिलती है।
- विनिर्माण उद्योगों में लोगों की बढ़ती भागीदारी से कृषि पर निर्भरता कम होती है।
- विनिर्माण द्वारा प्राथमिक और द्वितीयक क्षेत्रों में रोजगार के अवसर बढ़ती है।
- इससे प्रदेश में आर्थिक समृद्धि बढ़ती है और बेरोजगारी व गरीबी दूर होती है।
- विनिर्माण द्वारा उत्पादित वस्तुओं से निर्यात बढ़ता है जिससे विदेशी मुद्रा देश में आती है।
- विनिर्माण उद्योगों की व्यापकता को किसी देश की समृद्धि का पैमाना माना जाता है।
- विनिर्माण उद्योगों को आर्थिक विकास का मूलाधार समझा जाता है

© JCERT not to be republished

अभ्यास

1. नीचे दिए गए चार विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए :

(i) निम्न में से कौन-सा कथन असत्य है?

(क) हुगली के सहारे जूट के कारखाने सस्ती जल यातायात की सुविधा के कारण स्थापित हुए।

(ख) चीनी, सूती वस्त्र एवं वनस्पति तेल उद्योग स्वच्छंद उद्योग है।

(ग) खनिज तेल एवं जलविद्युत शक्ति के विकास ने उद्योगों की अवस्थिति कारक के रूप में कोयला शक्ति के महत्त्व को कम किया है।

(घ) पत्तन नगरों ने भारत में उद्योगों को आकर्षित किया है।

(ii) निम्न में से कौन-सी एक अर्थव्यवस्था में उत्पादन का स्वामित्व व्यक्तिगत होता है?

(क) पूँजीवाद

(ख) मिश्रित

(ग) समाजवाद

(घ) कोई भी नहीं

(iii) निम्न में से कौन-सा एक प्रकार का उद्योग अन्य उद्योगों के लिए कच्चे माल का उत्पादन करता है?

(क) कुटीर उद्योग

(ख) छोटे पैमाने के उद्योग

(ग) आधारभूत उद्योग

(घ) स्वच्छंद उद्योग।

(iv) निम्न में से कौन-सा एक जोड़ा सही मेल खाता है?

(क) स्वचालित वाहन उद्योग - लॉस एंजिल्स

(ख) पोत निर्माण उद्योग - लूसाका

(ग) वायुयान निर्माण उद्योग - फलोरेंस

(घ) लौह-इस्पात उद्योग - पिट्सबर्ग

2. निम्नलिखित पर लगभग 30 शब्दों में टिप्पणी लिखिए:

(i) उच्च प्रौद्योगिकी उद्योग

(ii) विनिर्माण

(iii) स्वच्छंद उद्योग

© JCERT not to be republished

3. निम्न प्रश्नों का 150 शब्दों में उत्तर दीजिए:

(i) प्राथमिक एवं द्वितीयक गतिविधियों में क्या अंतर है।

(ii) विश्व के विकसित देशों के उद्योगों के संदर्भ में आधुनिक औद्योगिक क्रियाओं की मुख्य प्रवृत्तियों की विवेचना कीजिए।

(iii) अधिकतर देशों में उच्च प्रौद्योगिकी उद्योग हैं। व्याख्या कीजिए। प्रमुख महानगरों परिधि क्षेत्रों में ही क्यों विकसित हो रहे

(iv) अफ्रीका में अपरिमित प्राकृतिक संसाधन हैं फिर भी औद्योगिक दृष्टि से यह बहुत पिछड़ा महाद्वीप है। समीक्षा कीजिए।

© JCERT not to be republished